अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर हिन्दी के उभरते आयाम

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

शोध सारांश

भले ही किसी विदेशी खासकर अतिविशिष्ट विदेशी के द्वारा हिन्दी के चंद शब्द बोलने से हिन्दी को वैश्विक भाषा कहना अतिश्योक्ति हो सकता है, तो भी जब अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की भारत यात्रा में अपने सम्बोधन में हिन्दी वाक्य बोलते हैं तो उसे कूटनीति के साथ–साथ हिन्दी के वैश्विक वर्चस्व का भी द्योतक माना जा सकता है। शायद यह कहना अनुचित न होगा कि आज भी भारत अन्य देशों की तुलना में अपनी भाषा को लेकर उतना तत्पर नहीं है जितना हिन्दी को वैश्विक भाषा बनाने के लिए जरूरी है। लेकिन सच यह भी है कि भारत की अनेक सरकारी अथवा सरकार से मदद प्राप्त संस्थाएँ हैं, जो विश्व के संदर्भ में हिन्दी के कदम बढ़ाने में गतिशील है। भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ परिषद, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय और महात्मा गाँधी हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय सहित अनेक भारतीय विश्वविद्यालय इस दिशा में अपनी–अपनी क्षमताओं और सीमाओं के अनुसार गतिशील हैं। आज अनेक देशों में हिन्दी की 'बसंत', 'पुरवाई' आदि पत्रिकाएँ, ई–पत्रिकाएँ–प्रयास, अभिव्यक्ति, अनुभूति आदि लगातार निकल रही हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में हिन्दी के बढ़ते कदमों में अच्छा योगदान कर रही हैं।

बीज शब्द– *अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य,हिन्दी,बाजारवाद, विकासशील, देश।*

अनवरत बदलते वैश्विक फलक को देखकर प्रतीत हो रहा है कि वैश्वीकरण, बाजारवाद, विकासशील तथा अल्पविकसित देशों पर समान भाषा, समान संस्कृति का दबाव बना रही है। वैश्वीकरण समरूपीकरण पर आधारित है जिससे वह विविधताओं को समाप्त कर समान रूचि, समान भाषा, समान संस्कृति, समान सभ्यता को स्थापित करने हेतु सबके एकीकरण पर बल दे रहा है। भारत में 'हिन्दी' भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के समय अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध देश की एकजुटता का माध्यम बनी थी तथा भाषा की शक्ति और सामर्थ्य पर लोगों का भरोसा मजबूत हुआ था। हिन्दी हिन्दुस्तानियों की पहचान आत्मविश्वास, आत्मगौरव तथा सांस्कृतिक परम्परा की मजबूत कड़ी भी साबित हुई थी। स्वतंत्र भारत में भाषा का प्रश्न देश के पुनर्निर्माण तथा विकास के साथ जुड़ गया था जिसके कारण भाषायी इतिहास, तत्कालीन परिस्थितियों और उसके भविष्य की इच्छाओं के अनुसार हिन्दी संघ की राजभाषा बनी जिससे भारतीय एकात्म संस्कृति की रक्षा हो सके परिणामस्वरूप लोहिया के नेतृत्व में 'अंगेजी हटाओं हिन्दी लाओं' जैसा आन्दोलन भी उठ खड़ा हुआ था । परतंत्र भारत में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखी गयी पंक्तियों 'निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल' का असर बराबर बना हुआ था। धीरे–धीरे कुछ राजनीतिक कारणों तथा आधुनिकता के बढ़ते प्रभाव के कारण हिन्दी अनुराग और हिन्दी निष्ठा में कमी आती रही फलस्वरूप अंग्रेजी शिक्षा के प्रति लोगों का मोह बढ़ने लगा। फिर भी हिन्दी प्रेमियों, साहित्यकारों, हिन्दी पत्रकारों की एक लम्बी श्रृंखला में मदन मोहन मालवीय, पुरूषोत्तम

दास टण्डन, श्री नारायण, विद्यानिवास मिश्र, अज्ञेय, धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय, राजेन्द्र माथुर जैसे– सम्पादकों ने भाषायी आदर्श, स्वाभाविकता और गौरव को बचाए रखने का कार्य चालू रखा।

वैश्वीकरण और बाजारवाद की दुनिया ने हमारी दुनिया को बेजोड़ तरीके से बदला है जिसने हमारे सोचने समझने, देखने की प्रवृत्तियों में उथल–पुथल मचा दी है। आमजन जीवन पर थोपे जा रहे नए–नए मूल्यों, मानकों और रूचियों ने भारत की सामाजिक संस्कृति के ताने बाने को तितर–बितर करना प्रारम्भ कर दिया है जिसे जार्ज कोनार्ड के शब्दों में इस प्रकार देखा जा सकता है– "यह एक खतरनाक समय है, शब्द की गरिमा नष्ट हो रही है। पात्र छिन्न भिन्न हो रहे हैं। स्मृतियाँ अस्त–व्यस्त और कोई भी यह कहकर अपने को तसल्ली नहीं दे सकता कि स्थितियाँ बदलेगी।" विश्वगाँव की परिकल्पना में भारतीय समाज का जीवन, मनोरंजन, शिक्षा के आयाम, रहन–सहन किस तरह बदल रहा है इसको निम्न विद्वान के शब्दों में देखा जा सकता है–स्टिंग जावर्ड– "भूमण्डलीकरण ने हमारे दैनिक जीवन के सामने भी चुनौती प्रस्तुत की हैं हमारा काम, भोजन, यात्रा, हमारा आराम और मनोरंजन की प्रक्रिया का हिस्सा बन चुके हैं। कुछ लोगों के लिए भूमण्डलीकरण का अर्थ है एक नया और उत्साहवर्धक यथार्थ जो आप के नए स्रोतों, नए–नए रमणीय स्थानों के अनुभव और नए–नए तरह के पकवानों के आस्वादन की सम्भावनाओं को प्रस्तुत करता है लेकिन दूसरों के लिए इसका अर्थ है विदेश चले जाने के कारण बेरोजगारी होने ऐसे नए पड़ोसी जिनके रीतिरिवाज आप से अलग है और जो आपकी भाषा नही बोलते तथा टेलीविजन पर दुनिया की ऐसी तस्वीरें जिन पर पुराने नियम–कायदे लागू नहीं होते हैं।"

विश्वपटल पर हिन्दी की उपस्थिति को लेकर हम गर्व कर सकते हैं बावजूद कुछ छिटपुट चिन्ताओं के। हिन्दी के गढ़ माने–जाने वाले देशों जैसे रूस और जर्मनी में हिन्दी के पठन–पाठन और उसके विस्तार पर आघात हुआ है। कुछ पहले ब्रिटेन के एक स्थापित विश्वविद्यालय में हिन्दी के पठन–पाठन को लेकर जो हुआ, वह काफी तकलीफ देह था। लेकिन सच्चाई यह भी है कि भारत में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रभावशाली आगमन और उससे उपजे भारतीय बाजार के दबाव ने हिन्दी की ओर बाहर और भीतर दोनों ही लोगों का न केवल ध्यान आकृष्ट किया बल्कि उसकी उपयोगिता को सिद्ध करते हुए उसके अन्यान्य रूपों के विस्तार को भी संभव किया है और यह क्रम बढ़ता ही जा रहा है। विश्व के स्तर पर हिन्दी के वेबजालों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती जा रही है। मीडिया और प्रोपेगेंडा साहित्य से लेकर वार्तालापी हिन्दी की दिशा में तो जैसे विस्फोट सा हुआ है। हिन्दी चैनलों की पहुँच उन देशों तक भी हुई है, जहाँ पहले इस दृष्टि से भयंकर उजाड़ था, जैसे दक्षिण कोरिया। मार्च 2010 में आई0सी0सी0आर नई दिल्ली के सभागार में अफगानिस्तान में हिन्दी सीखने वाले विद्यार्थियों की हिन्दी पर पकड़ देखकर हिन्दी भाषी गर्व महसूस करते है। अब तो देश के बाहर न केवल अनुवाद के माध्यम से बल्कि रचनात्मक लेखन के द्वारा भी हिन्दी अग्रसित हो रही है। हमें देश में एक उचित योजना के तहत हिन्दी में अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य को उपलब्ध कराना होगा, ताकि वह सब हिन्दी के माध्यम से विदेशों में पहुँचाया जा सके। विदेश के सन्दर्भ में हिन्दी को ही भारत की भाषा के रूप में निर्विवाद रूप से स्वीकृति दिलानी होगी बिना किसी अन्य भारतीय भाषा के प्रति पूर्वाग्रही हुए। अच्छी बात यह है कि बिना हिन्दीतर भारतीय भाषाओं का गला दबाए इसी दिशा में कुछ काम चल निकला है।

बीसवी शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ है। हिन्दी एशिया के व्यापारिक जगत् में

धीरे–धीरे अपना स्वरूप बिंबित कर भविष्य की अग्रणी भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित कर रही है। विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों और सैकड़ों छोटे–बड़े केन्द्रों में विश्वविद्यालय स्तर से लेकर शोध स्तर तक हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था हुई है। विदेशों में भी 25 से अधिक पत्र–पत्रिकाएं लगभग नियमित रूप से हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं। यूएई के 'हम. एफ–एम' सहित अनेक देश हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, जिनमें बी बी सी, जर्मनी के डॉयचे बेले, जापान के एनएचके वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिन्दी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 11 फरवरी 2008 को हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए हिन्दी सचिवालय की स्थापना की गयी। संयुक्त राष्ट्र रेडियो ने अपना प्रसारण हिन्दी में भी करना प्रारम्भ किया। दिसम्बर 2016 में विश्व आर्थिक मंच ने 10 सर्वाधिक शक्तिशाली भाषाओं की सूची जारी की जिसमें हिन्दी को भी स्थान प्राप्त हुआ। वर्ष 2017 में के इण्टरनेशल ने सीखने योग्य नौ भाषाओ में हिन्दी को स्थान प्रदान किया। भारत एकमात्र ऐसा देश हैं जिसकी 5 भाषाएं विश्व की 16 भाषाओं की सूची में शामिल हैं। 160 देशो के लोग भारतीय भाषाऐं बोलते हैं। विश्व के 93 देश ऐसे है जिनमें हिन्दी जीवन के बहुआयामों से जुड़ी होने के साथ विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर पढाई जाती हैं– चीनी भाषा मंदारिन बोलने वालों की संख्या हिन्दी बोलने वालों से ज्यादा है किन्तु अपनी चित्रात्मक जटिलता के कारण इसे बोलने वालों का क्षेत्र केवल चीन तक ही सीमित है। विश्व पटल पर हिन्दी बोलने वालों की संख्या दूसरे स्थान पर है किन्तु भारतीय और अनिवासी भारतीयों को जोड़ दिया जायें तो हिन्दी पहले स्थान पर आकर खड़ी हो जाती है।

हिन्दी को संवैधानिक दृष्टि से राजभाषा बने हुए सात दशक से अधिक समय होने वाला है, किन्तु अहम प्रश्न यह है कि कया व्यवहार में हिन्दी राजभाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है? आज से लगभग 73 वर्ष पूर्व जब भारत में गणतंत्र स्थापित हुआ था, उस समय यह घोषणा की गई थी कि गणतंत्र की राजभाषा हिन्दी होगी। यह भी स्वीकार किया कि अभी हिन्दी एक अविकसित भाषा है अतः एव इसे विकसित होने के लिए 15 वर्ष का समय निर्धारित किया गया है। 1950 से अब तक व्यवहार में गणतंत्र की राजभाषा अंग्रेजी का ही सर्चस्व बना हुआ है। शिक्षा जगत में विशेष रूप से उच्च शिक्षा क्षेत्र में हिन्दी का बेहाल बना हुआ है। हिन्दी को आज भी अपने स्थान के लिए संघर्ष करना पड रहा है। हम इस बात का नकार नहीं सकते कि हिन्दी कें प्रति सरकार एंव प्रशासन के लगातार भेदभाव एंव अपेक्षा पूर्व व्यवहार के कारण आज भी वह आपने अपेक्षित एंव संवैधानिक स्थान से वंचित है। परम्परागत ढंग से हम हर वर्ष हिन्दी दिवस अवश्य मनाते है और भारतीय गणराज्य की राजभाषा का उच्च दर्जा दिलाने का रोना भी रोते है, किन्तु इन सबके बावजूद हिन्दी अपने देश में अपने वास्तविक अधिकार को प्राप्त नही कर पा रही है।

आज सोशल मीडिया का दौर है, तो हिन्दी अब वहाँ भी राज कर रही है। हिन्दी का यह महत्व हमें आजादी की लड़ाई तक ले जाता है। जब वह देश भर में आजादी के दीवानों को जोड़ने वाली भाषा बनी थी। हिन्दी ने ही देश में एकता को बढ़ावा दिया था, आचार्य विनोबा भावे ने तो यह कहा था कि यदि मैनें हिन्दी का सहारा नहीं लिया होता, तो कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से केरल तक गाँव–गाँव में जाकर भूदान आंदोलन को नहीं फैला जा सकता था। आज भी हिन्दी का महत्व उतनी ही गम्भीरता से बरकरार है तभी चाहे बाजारवाद का पक्ष हो, अध्यात्म या पढ़ने लिखने का हिन्दी पहले तैसी ही मजबूती से खड़ी हुई नजर आती है।

आज हिन्दी दुनिया के 170 से ज्यादा देशों में किसी न किसी रूप में पढ़ाई जा रही है और भारत के बाहर हिन्दी के लगभग 600 स्कूल चल रहे हैं, हिन्दी को विदशों में भरपूर प्यार मिल रहा है, लेकिन अपने देश में इसके सामने चुनौतियों की कमी नहीं है अभी भी गैर हिन्दी भाषी इलाकों और गाँवों में हिन्दी को अच्छे खासे विरोध का सामना करना पड़ता है, ऐसे में हिन्दी भाषियों को सर्तक रहना होगा ओर भाषा को लेकर हिन्दी भाषियों को गर्व महसूस करना होगा।

हिन्दी बहुत तेजी से विश्व पटल पर प्रथम भाषा का दर्जा प्राप्त करने के लिए अग्रसर हो रही है। हिन्दी न केवल विश्व की समृद्ध, बल्कि या सर्वाधिक वैज्ञानिक अभिव्यक्तिपूर्ण और सुविधाजनक भाषा भी है। भारत के नागरिकों को विश्व समाज से जोड़ने का कार्य सूचना प्रौद्यौगिकी कर रही है। सूचना प्रौद्योगिकी के संचार साधनो की शक्ति हिन्दी बन रही है। जो शब्दकोष से विश्वकोष की और प्रयासरत है। अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हिन्दी आज विश्व की एक प्रतिष्ठित और मान्यता प्राप्त भाषा बनी है। वह विश्व के विभिन्न देशों में बचे भारतीयों की सम्पर्क भाषा भी है। विदेशों में हिन्दी शिक्षण का मूल्यांकन हो रहा है। प्रवासी भारतीय हिन्दी की प्रतीष्ठा के प्रति निरन्तर निष्ठावान है। आज वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण की स्थिति में मात्र हिन्दी ही सम्पर्क भाषा की भूमिका निभा सकती है।

उदारीकरण के बाद तीन दशक से अधिक समय तक हमने देखा था कि बहुराष्ट्रीय बाजार हिन्दी को खदेड़ देने का हौसला प्रदर्शित करता था। सबसे बड़े औद्योगिक घराने के अखबार मालिक अपने लोकप्रिय पत्र बंद करने लगे। धर्मयुग; साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सारिका, दिनमान, माधुरी जैसी पत्रिकाएँ अचानक बँद हो गई। स्टार टी0वी0 तो हिन्दी में एक भी प्रसारण न करने का संकल्प ही लेकर आया था। एक जी–टी0वी0 है उसने हिन्दी में अंग्रेजी का घोल तैयार करके अपनी अलग ही भाषा निकाल दी थी। सबको लगता था कि हिन्दी जैसी कठिन भाषा की जगह विश्व भाषा अंग्रेजी जल्द ही पूरे देश में छा जाएगी। पर हुआ क्या? उन्हीं अखबार के मालिकों ने अपने नये पत्र हिन्दी में निकाले। यह दावा करते हुए कि हम बाजार को सरल करके बताते हैं, हम हिन्दी है! स्टार कि कितने चैनल अंग्रेजी में बचे हैं? क्या स्टार खुद बचा है? किसी समय ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों को इंग्लैण्ड में अंग्रेजी न बोलने पर पांच पौंड जुर्माना देना पड़ता था, जबकि उनके सभी अधिकारी भारत आने पर हिन्दी में ही काम–काज करते थे, आज–कल अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में हिन्दी बोलने पर बच्चों को दो सौ से दो हजार रुपये तक जुर्माना देना पड़ता है। भाषा के प्रति हिकारत जगाने में इन उपायों का असर होता है। इससे जो पीढ़ी तैयार होती है, वह अपनी भाषा को तिरस्कार की दृष्टि से देखती है। अपनी भाषा गंवा देने वाले समाज अपनी स्वाधीनता और संस्कृति भी नहीं बचा पाते। जिन समाजों ने अपनी संस्कृति, स्वाधीनता बचाई है, उन्होंने सबसे पहले अपनी भाषा बचाई है। भारतेन्दु नाहक नही कहते थे कि सब प्रकार की उन्नति का मूल अपनी भाषा हैा इसलिए हिन्दी को लेकर हमें न गर्व की जरूरत है, न ग्लानि की, बल्कि परिस्थिति को समझ कर आचरण करने की जरूरत है।

इन्टरनेट पर हिन्दी का विस्तार – हिन्दी और विस्तृत हो रही हैं। इन्टरनेट पर भी हिन्दी का विस्तार हो रहा है। इन्टरनेट में हिन्दी का उपयोग सबसे तेज 94प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। अंग्रेजी की रफ्तार 19 प्रतिशत है हर 5 में से एक व्यक्ति हिन्दी में सामग्री ढूँढ़ रहा है। सन् 2021 तक इन्टरनेट पर करीब 35 करोड़ लोग हिन्दी के होंगे। स्मार्ट फोन और कम्प्यूटर पर

हिन्दी में सामग्री ढूढ़ने वाले लोगों की संख्या दो दुना तेजी से बढ़ रही है।

किसी देश को सांस्कृतिक दृष्टि से कमजोर करने का उपाय है उस देश की भाषा को खत्म कर देना। फिर अपने भाषा तंत्र के जरिए गुलामी का नक्शा रच देना। यही भाषा साम्राज्यवाद है जिसे स्पष्ट करते हुए फिलीस्तीन लिखते है कि 'अंग्रेजी से जुड़ी संरचनाएँ और विचार वैश्विक स्तर पर प्रचारित होते है। यानी अंग्रेजी का वर्चस्व विकसित देशों की संस्कृति के वर्चस्व की कथा भी साथ–साथ रच रहा है।' ऐसे समय में हिन्दी के प्रति समर्पित नागरिकों की जरूरत है जो वैश्विक वर्चस्व के युग में हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं को मजबूती से आगे बढ़ाते रहे। एक सच्चा भारतीय हिन्दी के विश्व भाषा बनने का स्वप्न देखता है वह चाहता है कि हिन्दी अपने देश में प्रतिष्ठित हो साथ ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी उसकी पहचान हो हिन्दी में विश्व भाषा बनने की अपार सम्भावनाएँ मौजूद है। वैश्वीकरण के परिदृश्य में हिन्दी की लड़ाई जीतने के लिए अंग्रेजी के आतंक और हिन्दी के प्रति हीनभावना की मनोवृत्ति से छुटकारा पाना होगा। हमारा संघर्ष भाषा के बाजारी मूल्यों का नही वरन् उसके खोते जा रहे सम्मान, उसके गौरव उसके स्वाभिमान के लिए होना चाहिए।

आज जब 21वीं सदी में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की तमाम संस्कृतियों एवम् भाषाई आदान–प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही है तो हिन्दी इस दिशा में विश्व मनुष्यता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर सकती है। उसके पास पहले से ही बहु सांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय रहने का अनुभव है जिससे वह अपेक्षाकृत ज्यादा रचनात्मक भूमिका निभाने की स्थिति में है। हिन्दी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुए हैं। उसने सदा–सर्वदा से विश्वमन को जोड़ा है। हिन्दी की मूल प्रकृति लोकतांत्रिक तथा रागात्मक सम्बन्ध निर्मित करने की रही है वह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की ही राष्ट्र भाषा नहीं है बल्कि पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, युगाना, त्रिनिटाड तथा सूरीनाम जैसे देशों की सम्पर्क भाषा भी है। वह भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों के बीच खाड़ी देशों, मध्य एशियाई देशों, समूचे यूरोप, कनाडा, अमेरिका तथा मैक्सिको जैसे प्रभावशाली देशों में रागात्मक जुड़ाव तथा विचार–विनमय का सबल माध्यम है। यदि निकट भविष्य में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था निर्मित होती है और संयुक्त राष्टँ संघ का लोकतांत्रिक ढंग से विस्तार करते हुए भारत को स्थायी प्रतिनिधित्व मिलता है।

हिन्दी को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि दिलाने और लोकप्रिय बनाने में हिन्दी फिल्मों की भी महती भूमिका रही है। विश्व में हिन्दी फिल्मों के दर्शकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। आज हिन्दी फिल्मों ने पूरी दुनिया में अपना जाल फैलाना शुरू कर दिया है। यही नहीं हिन्दी दर्शकों की संख्या को देखते हुए लगातार अंग्रेजी फिल्में हिन्दी में डब होकर आ रही हैं और हिन्दी का संसार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। पूरी दुनिया में हिन्दी फिल्मों की धूम मची है, जिस प्रकार से बॉलीवुड का विश्वव्यापी विकास होगा। हिन्दी फिल्मों का बाजार भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों में भी है। हिन्दी का लोकार्पण तो विदेशों में भी हो रहा है। हिन्दी के वैश्विक स्तर का यह एक बड़ा प्रमाण है। विश्व के देश अब हिन्दी के महत्व को समझने लगे हैं। अमरीका का मानना है कि हिन्दी ऐसी विदेशी भाषा है जिसे 21वीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए वहाँ के नागरिकों को सीखना चाहिए, ताकि वे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक दृष्टि से प्रतियोगी हो सकें। राष्ट्रपति जार्ज बुश ने राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा अभिक्रम योजना में 11 करोड़ 40 लाख अमरीकी डालर बजट रखा है ताकि अमरीकी लोग हिन्दी, फारसी, अरबी और चीनी भाषा सीख सके। हाल ही में 14 फरवरी

2002 की सूचना के अनुसार एजुकेशन कंसलटेंट इंडिया लि0 के सूत्र बताते हैं कि संयुक्त राज्य अमरीका के दो राज्यों–साउथ कैरोलिना और फनेक्टिकु ने भारत से हिन्दी पढ़ाने वाले शिक्षकों की मांग की है। अब अमेरिका में रह रहे भारतीय ही नहीं, बल्कि अमेरिकन भी हिन्दी सीखने में रुचि ले रहे हैं। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा में दूसरी भाषाओं की तरह ही हिन्दी को भी वैकल्पिक भाषा के रूप में रख लिया है।

आज विश्व में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी के हैं। इसका आशय यही है कि पढा–लिखा वर्ग भी हिन्दी के महत्त्व को समझ रहा है। वस्तुस्थिति यह है कि आज भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया, मॉरीशस,चीन,जापान,कोरिया, मध्य एशिया, खाडी देशों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका तक हिंदी कार्यक्रम उपग्रह चैनलों के जरिए प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं। आज मॉरीशस में हिंदी सात चैनलों के माध्यम से धूम मचाए हुए है। विगत कुछ वर्षों में एफ.एम. रेडियो के विकास से हिंदी कार्यक्रमों का नया श्रोता वर्ग पैदा हो गया है। हिंदी अब नई प्रौद्योगिकी के रथ पर आरूढ होकर विश्वव्यापी बन रही है। उसे ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–बुक, इंटरनेट, एस.एम.एस. एवं वेब जगत में बडी सहजता से पाया जा सकता है। इंटरनेट जैसे वैश्विक माध्यम के कारण हिंदी के अखबार एवं पत्रिकाएँ दूसरे देशों में भी विविध साइट्स पर उपलब्ध हैं।यहां तक कि स्वयं गूगल का सर्वेक्षण सिद्ध कर रहा है कि विगत दो वर्षों में सोशल मीडिया पर हिंदी में प्रयुक्त होने वाली सामग्री में 94प्रतिशत की बढोतरी हुई है जबकि अंग्रेजी में मात्र 19 प्रतिशत की हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी हिंदी के वैश्विक राजदूत और सुपर ब्रांड बन गए हैं। संपूर्ण विश्व के अलग अलग हिस्सों में उन्हें सुनने के लिए जिस तरह भारी भीड़ जमा होती है वह प्रकारांतर से हिंद और हिंदी की बढ़ती शक्ति का उद्घोष भी है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हिन्दी वैश्विक फलक पर अपना स्थान अवश्य बनायेगी। हमारी राज भाषा हिन्दी जिस तरह आपसी संवाद के माध्यम के रूप में सम्पर्क भाषा है वैसी है वैश्वीकरण के दौर में फिल्मी बाजारों में व्यवहार में लायी जा रही है। विश्व के हिन्दी समुदाय को एक सूत्र में बांधने के लिए हिन्दी आज युगीन परिस्थितियों के अनुरूप लक्ष्य निर्धारित कर भविष्य की संभावनाओं और चुनौतियों को सहज सरल बनाने के लिए प्रयासरत है। निःसंदेह कामना है कि वैश्वीकरण की दिशा हिन्दी का पथ प्रशस्त है।

सन्दर्भ सूची

1. दुबे मालती– वैश्विक परिपेक्ष्य में हिन्दी, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद,प्राक्कथन, 1992,1999
2. मलिक मोहम्मद, राष्ट्रभाषा विकास के विविध आयाम, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
3. भट्ट मोहनलाल, (प्रकाशक), रजत जयंती ग्रंथ, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, 1962
4. द्विवेदी महावीर प्रसाद, हिन्दी भाषा, वाणी प्राकशन, नई दिल्ली, 2003
5. दैनिक भास्कर (समाचार पत्र दिनांक 14 सितम्बर 2019) जबलपुर संस्करण
6. बाहरी डॉ0 हरदेव : हिन्दी भाषा,संस्करण 1994ई0, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847, विश्वविद्यालय मार्ग, इलाहाबाद
7. बाहरी डॉ0 हरदेव : शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश, परिशिष्ट 1, राजपाल ऐण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली, सं0 1994ई0

8. आफताब आलम : द सण्डे इण्डिया, 30 मई 2010ई0
9. विनीत कुमार : नया ज्ञानोदय, मई 2010
10. प्रभाकर श्रोत्रिय : 'अन्यथा' जुलाई 2006
11. वागर्थ, दिसम्बर 2009
12. अक्षरा (पत्रिका) सितम्बर अक्टूबर 2015 म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल
13. रचना (पत्रिका) 15 जुलाई 2015, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल (म.प्र.)
14. पी.आर. निवास शास्त्री, कर्नाटक में हिन्दी प्रचार की गतिविधियाँ, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बैंगलोर, 1998
15. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली–110002, सं0 2015 ई0।
16. मोहम्मद डॉ0 मलिक : राजभाषा हिन्दी,प्रवीण प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली– 1100030, सं0 1993 ई0।
17. रचना (पत्रिका) मई जून 2018 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल (म.प्र.)
18. एन. वेंकटेश्वर, संपादक, दक्षिण में हिन्दी प्रचार आन्दोलन का इतिहास, ऑफसेट डिविजन, 1994
19. शर्मा रामविलास– भाषा और समाज– राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. 1 बी नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, तीसरा संस्करण–1989
20. शर्मा रामविलास–ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा–राजकमल प्रा.लि. 1 बी नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, प्र. सं.–2001
21. सांकृत्यायन राहुल–राष्ट्रभाषा हिन्दी–राधाकृष्ण प्रकाशन, जी–17, जगतपुरी दिल्ली–110051, प्र. संस्करण–2002, आवृत्ति–2004
22. द्विवेदी महावीर प्रसाद–हिन्दी भाषा –वाणी प्रकाशन–21 ए दरियागंज, नई दिल्ली 110002, संस्करण–1995
23. गोपी कृष्ण राठी, मधुकर, गोवर्धन शर्मा–राष्ट्रभाषा हिन्दी–रूपा बुक्स प्रा.लि. एस–12 शापिंक काम्पलेक्स तिलक नगर जयपुर–302004, प्र.सं.–1995
24. मृगेश मणिक, राजभाषा की प्रवृतियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006